>

Title: Regarding adverse impact of Western culture on the youths of the country.

डॉ. किरीट प्रेमजीभाई सोलंकी (अहमदाबाद पश्चिम): महोदय, पश्चिमी देशों की आयातित अपसंस्कृति का भारत की वर्तमान पीढ़ी पर दुप्रभाव जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे पर मुझे अपनी बात रखने का अवसर प्रदान करने हेतु मैं आपका आभारी हूं। सबने गत वर्षों में देश में सांस्कृतिक रुझान बदलते देखा है। हम आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक प्रभाव के उतार चढ़ाव के साक्षी हैं। मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि इन चमकीले परिवर्तनों के प्रभावों के बीच हम कुछ खोते जा रहे हैं, जिसे बचाना और बनाए रखना देश के उज्जवल भविष्य के लिए बहुत जरूरी है। आज हमारे देश की युवा पीढ़ी पश्चिमी देशों की विकृत संस्कृति तथा भोग विलास की जीवन शैली से प्रभावित है, इसका असर देश में घटने वाले विभिन्न अपराधों में देखा जा सकता है। पश्चिमी सांस्कृतिक आंधी के चलते भारत के सामाजिक मूल्यों का तेजी से ह्रास हो रहा है। यह पीढ़ी आत्मकेंद्रित तथा संवेदना शून्य होती जा रही है, यह खतरनाक संकेत है। टेलीविजन तथा फिल्मों में परोसे जाने वाली अधिकांश सामग्री हमारे अपरिपक्व युवाओं पर विपरीत असर डाल रही है। अनावश्यक पश्चिमी प्रभाव वाले विज्ञापन पीढ़ी को भटका रहे हैं तथा युवाओं में शराब, तम्बाकू, गुटका एवं ड्रग्स की प्रवृत्ति बढ़ रही है। मैं आपके माध्यम से सरकार से निवेदन करना चाहता हूं सरकार को ऐसे तमाम कार्यक्रमों पर रोक लगानी चाहिए जिनके प्रदर्शन का प्रभाव युवा पीढ़ी को सही दिशा से भटका रहा है। आज देश में चारों ओर अपराध, हत्या, बलात्कार, वृद्धों की हत्या, छोटे बच्चे-बच्चियों से दुष्कर्म जैसी जघन्य घटनाएं घट रही हैं, यह राष्ट्र के सामने गंभीर चिंता का विषय है। हम आखिर वर्तमान दौर में नौजवानों और बच्चों को कौन सा स्वप्न और भविष्य प्रदान कर रहे हैं?